

ते शारदा विश्व मोहिनि ॥ नमस्कारिणी मिया ॥ २२ ॥ मज हृदई सद्रु ॥ जेणे तारि लोहा संसा
रपुर ॥ लणो निविशे ध्यायादर ॥ विवेकावरी ॥ २३ ॥ जैसे डाळया अंजन भेटे ॥ ते कृत्वि दृष्टी
स्ति फारा फटे ॥ मग वास पाहिजे ते थं प्रकटे ॥ महानिधि ॥ २४ ॥ काचिंता मणि जाळे या हा
ति ॥ सदा विजय वृत्ति मनोरथि ॥ तैसामी पूर्ण काम निवृत्ति ॥ ज्ञान देवा प्रणे ॥ २५ ॥ लणो
निजाणते निगुरु भजिजे ॥ तेणें हत कार्या होइजे ॥ जैसे मूळ सिंचनि सहजे ॥ शाखा प
ल्लव संतोषति ॥ २६ ॥ कातीर्थे जिये विभुवनी ॥ तिये घडति सभुद्रावगाहुनि ॥ नातरि अ
मृतर साखादनी ॥ रस सकळ ॥ २७ ॥ तैसा पुडत पुडति तो नि ॥ मिया अभिवंदित्वा श्रीगु
रुचि ॥ जो अधिष्ठावित मनोरुचि ॥ पुरविता तो ॥ २८ ॥ आता अवधारा कथा गहन ॥ जे
सकळा कौतुका जन्मस्थान ॥ किं अभिनव उद्यान ॥ विवेकतरुचे ॥ २९ ॥ नातरि सर्व सुखा
चि आदि ॥ जे प्रमयहानिधी ॥ नाना नवरस सुधाब्धि ॥ परिपूर्ण हे ॥ ३० ॥ किं परम धाम प्र

३
कर ॥ ह विद्याचे मूळपीटा ॥ शास्त्रज्ञात विरिष्ट ॥ अशेषाचा ॥ ३० ॥ नातरि सकळ धर्माचे
मालियेर ॥ अज्ञानाचे जिकार ॥ धावण्यरुन भांडार ॥ शारदेचे ॥ ३१ ॥ नाना कथारूपे भारति
प्रकट लिखसे त्रिजगति ॥ अविष्करो निमहा मति ॥ व्यासाचिये ॥ ३२ ॥ प्रणे निहाका व्यारा
वो ॥ अंधगस्वती चाटोवो ॥ येथू निरसा जाला आवो ॥ रसाक पणाचा ॥ ३३ ॥ तेवीचि अका
आणीक येक ॥ येथो निरुच्छ्री सतू शास्त्रिक ॥ आणि महा बोधीको वळिक ॥ दुणा वलि ॥ ३४ ॥
माधुर्यिमधुरता ॥ मृंधारिसुरखता ॥ रूठपण उचिता ॥ दिसे भले ॥ ३५ ॥ येथ चातुर्य
शाहाणे जाले ॥ प्रमय रूची सआले ॥ आणि सौभाग्यपो खले ॥ सुखाचे येथ ॥ ३६ ॥ येथ कर्म
विश्रपणे कळा ॥ पुण्यासि प्रताप आगळा ॥ लुणो निज न्मे जयाचे अवलिळा ॥ दोव हरले ॥ ३७ ॥
आणि पाहाताना वेक ॥ रंगी सुरगतेचि आगळिक ॥ गुणास गुणपणाचे विक ॥ बहु वसयेथे ॥ ३८ ॥
भानुचे निते जेध वळले ॥ जैसे त्रैलोक्य दिसे उजळले ॥ तैसे व्यासमती कवळले ॥ मिरवे विश्व ॥ ३९ ॥
का सुक्षेत्री बीज घातले ॥ ते आपुलिया परि विस्तारले ॥ तैसे भारती सुरवाडले ॥ अर्थ जात ॥ ४० ॥

नातरि नगरांतरि वसिले ॥ तारि नागराचि होयिजे ॥ तैसे व्यासोक्ति तेजे ॥ धवळि तसकळ ॥ ४१ ॥
किप्रथमवयसाकाळि ॥ लावण्याचि नकाळि ॥ प्रकटे जैसी आगळि ॥ अंगना आंगि ॥ ४२ ॥ नातरि
पुद्यानि माधवि घडे ॥ तथवनशोभेचि खाणै घडे ॥ आदितापासौ निअपाडे ॥ जिया परि ॥ ४३ ॥
नानाघनिभुतसुवर्ण ॥ जैसेनेहाळि तासाधारण ॥ प्रगअळकारि वखेपण ॥ निवाडदावी ॥ ४४ ॥
तैसेव्यासोक्तिअवकरले ॥ आवडतेवखेपणपातले ॥ तेजाणेनिचिकायि आयायिले ॥ इ
तिहासि ॥ ४५ ॥ नानापुरतियेप्रतिष्टेत्कागी ॥ सानिवधरनिआंगी ॥ पुराणेआख्यानरूपेजगी ॥
भारताआळी ॥ ४६ ॥ अणोनिमहाभारतीनाही ॥ तेमोहेचिलोकीतिहि ॥ येणेकारण सुणिपे
पाहि ॥ व्यासोच्चिष्टजगत्रय ॥ ४७ ॥ हेसीसुरसजगीकथा ॥ जेजन्मभूमिपरमार्था ॥ मुनी
सांगे नृपनाथा ॥ जन्मेजया ॥ ४८ ॥ जेअद्वितियउतम ॥ पवित्रैरुनिरोपम ॥ परममंगअधाम ॥
अवधारिजो ॥ ४९ ॥ आताभारतीकमळपराग ॥ गीताख्यप्रसंग ॥ जोसंवादका श्रीरंग ॥ अ
र्जुनेसि ॥ ५० ॥ नातरिशब्दब्रह्मावधी ॥ मथिलियाव्यासबुद्धि ॥ निवडलेनिरवधी ॥ नवनीतहे ॥ ५१ ॥

मम ज्ञानान्निसंपर्कः॥ कउसितेविवेके॥ वदुआलपरिपाके॥ अमोहामि॥ ५२॥ जेअपेक्षी
जेविरक्ति॥ सदाअनुभवजेसंती॥ सोहंभावेपांरगती॥ रमितेजेथे॥ ५३॥ जेआकर्णजेभ
क्ति॥ जेआदिवंदुत्रिजगति॥ तेभीअपकीसंगति॥ सांगिजेता॥ ५४॥ जेभगद्गीता॥ अणि
जे॥ जेब्रह्मेशानिप्रसंसिजे॥ जेसनकादिकिसेविजे॥ अथादेरसी॥ ५५॥ जेसेशारदियेचेचे
द्रकवे॥ माजिअमृतकणकोवळे॥ तेवेचितिमनेमोवाळे॥ चकारेतळगे॥ ५६॥ तियापरिश्रोता
अनुभवावीहेकथा॥ अतिहळुवारपणचिन्ता॥ आणुनिया॥ ५७॥ हेराबेवीणसंवादिजे॥ इद्रि
यानेणलाभोगिजे॥ बोलाआधीसांबिजे॥ प्रमयासी॥ ५८॥ जेसेभ्रमरपरागनेती॥ परिक्रम
कदनेणति॥ तेसिपरिआहसेविति॥ ग्रंथीइये॥ ५९॥ काआपुलाटावनसंडिता॥ आंकिमि
जेचंद्रप्रकरता॥ हाअनुरागभोगिता॥ कुसुदिनिजाणे॥ ६०॥ हेसनिगंभीरपणे॥ धिरावलेअ
तःकरणे॥ आथिलानोजाणे॥ मानुषिये॥ ६१॥ अहोअर्जुनावियेपाति॥ जेपरिसणयायो
ग्यहोति॥ तिहिल्लपाकरुनिसंति॥ अवधानद्यावे॥ ६२॥ हेसळगीमीयात्प्रणितळे॥ चरणामा

गोत्रि विन विवे ॥ प्रभुसखो लह द्य आपुला ॥ लुणो निया ॥ ६३ ॥ जैसा स्वभावो मायवापाचा
अपत्यबोले तरि बोवडावाचा ॥ तहि अधिकतयाचा ॥ संतोषविआथी ॥ ६४ ॥ तेसा तु श्रीमी
अंगिकारिला ॥ सज्जनी आपुला लुणितला ॥ तरि उणे सहजे उपसाहला ॥ धार्थू कायि ॥ ६५ ॥
परि अपराधतो आणी कुआहे ॥ जे मीगीतार्थ कवकुपाहे ॥ ते अवधारा विन उलाहे ॥ लुणो निया ॥ ६६ ॥
हे अनावरन विचारिता ॥ वायाचि धिक्सा उपमला चिता ॥ जे कवी कायि भानु ते जी स्वद्योता ॥ ६७ ॥
भाआधि ॥ ६७ ॥ काटिदिभुचाचुवरि ॥ माप सुयसागरी ॥ मिनेण तुष्टापरि ॥ प्रवर्तयेथ ॥ ६८ ॥ ओ
काआकाशगवसावे ॥ तरि आणीकतयाहू निधोरहो आवे ॥ लुणो निअपाडुहे आवेव ॥ निर्धारिता ॥ ६९ ॥
यागीतार्थोचि थोरी ॥ स्वयंशं विवरी ॥ जेथ भवनि प्रसकरी ॥ च मकारोनि ॥ ७० ॥ तथहू
लुणे नेणिजे ॥ देवी जैसे कास्वरूपतुसे ॥ तेसेहे नित्यनूतनदेखिजे ॥ गीतातत ॥ ७१ ॥ हावदार्थ
सागर ॥ जयानिद्रिताचाघोर ॥ तोस्वयंसेवमर ॥ प्रत्यक्षअनुवादला ॥ ७२ ॥ हेसेजे आगाथ
जेथवेडावतीवद ॥ तथअल्प प्रीमतिमंद ॥ कायहोये ॥ ७३ ॥ हेधपारकैसे निवृवमावे म

हाते ज कवणे धर्मे ॥ गगन मुठी सुवाते ॥ मरुत के केनी ॥ ७४ ॥ परिये थअसे ये कआधार ॥ त
 णचि बोले मी सधर ॥ जेसान कूर श्रीगुरु ॥ ज्ञान देवा लुणे ॥ ७५ ॥ यकू वीत कि मी प्रसु ॥ जरि जा
 ला अवि वेकु ॥ तकि संत लु पा दी पकु ॥ सो ज्वर असे ॥ ७६ ॥ लो हाचे कन के होये हे सामर्थ्य प
 रि सीचि आहे ॥ काम त ही जिवित लाहे ॥ अमृत सिद्धि ॥ ७७ ॥ जरि प्रकट सिद्ध सरस्वति ॥ तरि
 मुक्किया आधी भारति ॥ येथ वस्तु सामर्थ्य सात्ति ॥ नवल कायी ॥ ७८ ॥ जया ते कामधेने
 माये ॥ तया ते अप्राप्य काहि आहे ॥ लुणो निमी प्रवती लाहे ॥ ग्रंथि रये ॥ ७९ ॥ तकि न्युन्यते पुरत
 अधी कसरते ॥ कर निघया वेहे तुमते विनवीत असे ॥ ८० ॥ आता देवि जे अवधान ॥ तुळी बोल
 विला मी बोलै न ॥ जै सचेष्ट सुत्राधि न ॥ दारु यंत्र ॥ ८१ ॥ तै सामी अनुग्रहित ॥ साधु चानि रोपित
 ते आपुला अळे करित ॥ भले नया परि ॥ ८२ ॥ तव गुरु लुणति राहि ॥ हे तुज बोलावे न लगे काहि ॥ आ
 ता मंथा चित्त देयी ॥ स उकरि वेगा ॥ ८३ ॥ या बोला निवृत्ति दासु ॥ पावो निपरम उल्लासु ॥ लुणे
 परि ये सामना वकारु ॥ दे उनिया ॥ ८४ ॥ **श्लोक ० ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरु**

क्षेत्रे समवेतायुषु सवः ॥ मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ ७ ॥ टिका ॥
 तरि पुत्रस्नेहे मोहितु ॥ धृतराष्ट्र असेपुसतु ॥ ह्यणे संजयासांगे मातु ॥ कुक्षेत्रिची ॥ ८ ॥ जे
 धर्मो लय ह्यणिजे ॥ तिथे पांडव आणि मासे ॥ गेले असति व्याजे ॥ तु साचे नि ॥ ९ ॥ तरि तेचि
 ये तु ता अवसरि ॥ काय विजते से ये री ॥ हे स उ करि कुथन करी ॥ मज प्रति ॥ १० ॥ श्लोक ॥ सं
 जय उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पांडवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ॥ आचार्यमुपसंगम्य राजा
 वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ टिका ॥ तिये वेळितो संजयो बोले ॥ ह्यणे पांडव से न्यु उचले ॥ जैसे
 महा प्रलेपि पसरले ॥ हंता लमुख ॥ ३ ॥ तैसे ते घन दार ॥ उठाव ले ये कवटा ॥ जैसे उ सळ ले का
 कुठ ॥ धरि कवण ॥ ४ ॥ ना तरि व उवा न कु सा दु कला ॥ प्रलय वा ते पोषला ॥ सागर रोगु नि उ
 धवला ॥ अंबरा सी ॥ ५ ॥ तैसे दळ दुर्धर ॥ ताना व्यु हि परि कर ॥ अवगम ले भया सुर ॥ तिये का वि ॥ ६ ॥
 ते देखिले पादुर्योधने ॥ अकुरिले कवणे माने ॥ जैसे न गणिजे पंचानने ॥ गजघंटा ते ॥ ७ ॥ म
 गद्राणा पासि आला ॥ तया ते ह्यणे हो देखिला ॥ कैसा दळ भार उचलेला ॥ पांडवाचा ॥ ८ ॥ श्लो

६१

क॥ पर्यैतां पांडुपुत्राणामाचार्य महतीं च सुं ॥ व्युत्पादुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीम
ला ॥ ३ ॥ टिका ॥ गिरिदुर्ग जैसे चालते ॥ तेसे विविध व्युहस भोवते ॥ हेरचिते आधि बुद्धि वं
ते ॥ दृपदकुमर ॥ ९४ ॥ जो का तुलसी सीक्षापिला ॥ विद्यादे उ निकुञ्ज केला ॥ तेण हा सैन्य सि
हु पाखरिला ॥ देख देख ॥ ९५ ॥ श्लोक ॥ अत्र मूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ॥ यु
युधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥ टिका ॥ आणि कहि असाधारण ॥ जे राखा
स्त्री प्रविण ॥ जे क्षात्र धर्म निपुण ॥ वीर आ हाति ॥ ९६ ॥ बळे प्रोळी पौरुषे ॥ जे भीमार्जुना
सारिखे ॥ ते सांगे न कवतुके ॥ असंगे ची ॥ ९७ ॥ येथ युयुधान सुभद्र ॥ आता असे विराट ॥ म
हारथी शत्रु ॥ दृपद वीर ॥ ९८ ॥ श्लोक ॥ धृष्टकेतुश्चेकितानः ॥ कारीराजश्च वीर्यवान्
पुरुजित्कुंतिभोजश्च शौब्यश्च नरसुंगवः ॥ ५ ॥ टिका ॥ चेकितान धृष्टकेतु ॥ का
सी श्वर विकंतु ॥ उत्तमो जा नृपनाथ ॥ शौब्य देखु ॥ ९९ ॥ हा कुंतिभोजु पाह ॥ येथ युधामन्यु
आता आहे ॥ आणि पुरुजिता दिराये ॥ सकळ जाण ॥ १०० ॥ श्लोक ॥ सुधामन्युश्च वि

क्रांत उत मौजाश्च वीर्यवान् ॥ सौभद्रो द्रोपदेयाश्च सर्वदुव महारथाः ॥ ६ ॥ टिका ॥

हा सुभद्रादृश्यनेदुन ॥ जो अपर नवा अर्जुन ॥ तो अभिमन्यू सुणे दुर्वाधन ॥ देखे द्रोणा १० ॥

आणि वृष्टिपदी कुमरो हे सकळ महारथी वीर ॥ मितिने णिजे अपारा ॥ मीने ते असति ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥ अस्माकं तु विशिष्ये तान्निबोधद्विजोत्तम ॥ नायकाममसैन्यस्य संतार्थ

तान्ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥ टिका ॥ आता आमचा दळि नायक ॥ जो रुठे वीर सैन्यक ॥ ते प्रसंगे आ

यिक ॥ सांगी जती ३ ॥ श्लोक ॥ भवान्भीष्मश्च कर्णश्च ह्यपश्च समितिजयः ॥ अश्व

थामा विकर्णश्च सोमदत्तिस्तथैव च ॥ ८ ॥ टिका ॥ उदरे ये कर्णेनी ॥ जायि जति बोला नि

तुली आदि कर्ण ॥ मुख्य जे जे ॥ हा भीष्म गंगानंदनु ॥ जो प्रताप ते जस्वी भानु ॥ रिपु गज

पंचाननु ॥ कर्ण वीर ॥ ये क्ये काचे निमानो व्यापार ॥ हे विष्णु होय से हरे ॥ हा ह्यपाचार्यनपुः

ये कर्णानी ॥ येथ विकर्ण वीर आहे ॥ हा अश्वथामा पै लुपाह ॥ याचा अउर सदाना हे ॥

लो कत्रय १६ ॥ आधीचिसमुद्रपाहि ॥ तेथद्याउपणकवणनाहि ॥ मगवाडवानळतैसबाहि
 विरजाजैसा १७ ॥ नातरिप्रभयवदिमहावातु ॥ यादोघाजैसासांघातु ॥ तैसाहागंगासुतु ॥ से
 नापती १८ ॥ आतायेणसिकवणभिडोहपांउवसैन्यकीरथोडे ॥ कोरिचितेनिपोडे ॥ दिसतसे १९ ॥
 वरिभीमसेनबेथु ॥ तोजाकासेसेनानाथु ॥ असेबोलानिहेमातु ॥ सांडिलितेणे ॥ २० ॥ **श्लोक ॥**
अयनेसुचसर्वयुयथाभागमवस्थिताः ॥ भीष्ममेवाभिरक्षंतु भवंतः सर्वविवहि ॥ १ ॥
रिका ॥ मगपुनरपीकायबोले ॥ सकळकांतलणितले ॥ आतादळभारआपुलाळे ॥ सरिसकरा २१ ॥
 जयाजियाअक्षोहिणि ॥ तेणेतियाधारणि ॥ वरगणकवणकवणी ॥ महाराथिया २२ ॥ तेणेतआ
 वरिजे ॥ भीष्मातकिराहिजे ॥ द्राणास्रणेपाहिजे ॥ तुत्वीसकळ ॥ २३ ॥ हाचियेकरक्षावामीतैसा
 हादेखावा ॥ यणेदळभारआघना ॥ सान्चआमुचा २४ ॥ **श्लोक ॥ तस्यसंजनयनहर्षकुरुद**
क्षु-पितामहः ॥ सिंहनाद्विनयोच्चैः शंखध्मोप्रतापवान् ॥ १२ ॥ टिका ॥ चाराज
 याचयाबोला ॥ सेनापतिसंतोषता ॥ मगतेणेबोला ॥ सिंहनादु २५ ॥ तोगाजतसेअद्भुतुदोडी

तैन्य

सैन्या आंतु ॥ प्रतिध्वनि न समातु ॥ उपजत असे ॥ २६ ॥ तथा चितु लगा सेत ॥ वीर वृत्तीचे निथावे दि
व्यशंख भीष्मदेवे ॥ आसुरिका ॥ २७ ॥ ते दोळी नाद मिनते ॥ तथैत्रै लोक्य बधिर भूत जाले ॥ जै से
का आकारो पडिले ॥ तुंगनिया ॥ २८ ॥ घड घडित अंबर ॥ उचं बळत सागर ॥ क्षोभले चराचर ॥ काप
त असे ॥ २९ ॥ तेणे महाघोष गजेर ॥ दुमदुमिताति गिरिकंदेर ॥ तव दळामा तिरणतुर ॥ आसुरिकि ॥ ३० ॥
॥ श्लोक ॥ ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ॥ सहसैवाभ्यर्हन्त्यंतसशब्दस्तमु
लोभवत् ॥ १३ ॥ टिका ॥ उदंडे सैधवा जते भयानके खाखाते महाप्रळयोजेथे धाकडो सि ३२
भेरी निशाण मांदळ ॥ शंखली काहा भोगळ ॥ आणि भया सुररणकोल्हाळ ॥ सुभयचे ॥ ३२ ॥ आवरी
भुजत्रा हा रिति ॥ विसणैते हाका देती ॥ जेथे महामद भद्र जाति ॥ आवरती ना ॥ ३३ ॥ तेथे भेडाचि
कवण मातु ॥ काचया कर पिरतु ॥ जेणे द्यकला कृतंतु ॥ आंगने घे ॥ ३४ ॥ येका उभयाचि प्राणमेल
यांगाचे रांत वैसले ॥ विरिदाचे दादुले ॥ हिवता ती ॥ ३५ ॥ हैसा अद्रुत तुरवं बाळु ॥ आपिको निवसा
व्याकुळु ॥ देव प्रणति प्रळयकाळु ॥ बोउवला आजि ॥ ३६ ॥ भैरि स्वर्गी मातु ॥ दुखो नितो धाकांतु ॥

तवपां उवदमा आतु ॥ वर्तले कार्थि ॥ ३७ ॥ हो कानि जसार विजयाचे ॥ किने भो डार मा हाते जाचे ॥ जे
थे गरडा चिये जावळिचे ॥ कातले च्या ही ॥ ३८ ॥ श्लोक ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्बुक्तो महतिस्पर्शने स्थितो
॥ माधवः पां उव श्वैर्वदि ज्योशंखो प्रधनुः ॥ ११ ॥ ठिका ॥ निपासाचा मरु जैसा ॥ रंहु वरु मिर वतु स
तैसा ॥ ते जे को धार लिया दिरा ॥ जयाचे नि ॥ ३९ ॥ जेथ अश्व वाहु कु अपणा ॥ वैकु टि चाराणा जाण
तयारथाचे गुण ॥ काय वर्ण ॥ १२ ॥ ध्वजस्तंभावरि वानर ॥ तो मूर्ति मंतु शंकर ॥ सारथि सारंग
धर ॥ अर्जुने सी ॥ ४० ॥ देखानवल तया प्रभुचे ॥ अद्भूत प्रम भक्ताचे ॥ जसारथ्य पार्थीचे ॥ करितु अ
से ॥ ४१ ॥ पाशु कु पाहि सिघातला ॥ धापण पुठारा हिला ॥ तेणे पांच ज न्य ध्यासु रिला ॥ अवलि माचि ॥ ४२ ॥
॥ श्लोक ॥ पांचजन्यं हवीक्रे शो देवदत्तं धनं जयः ॥ पौंड्रं ध्यौ महारां खं भीमकर्मा वक्रोद
रः ॥ १५ ॥ ठिका ॥ परितो महाघोषथोर ॥ गाजतस ग हिर ॥ जैसा उदै लालो पीदि नकर ॥ न
क्षात्राते ॥ ४३ ॥ तैसे तुर बंबाळ भवते ॥ कौरवदुकि गाजत होते ॥ ते हारपोनि नेणे केउते ॥ गले
तथा ॥ ४४ ॥ तैसा चिदखयरा ॥ निनादे अतिगहिर ॥ देवदत्त धनुद्धर ॥ ध्यासु रिला ॥ ४५ ॥ ते दो

निशब्धचाट ॥ मिनले येक वार ॥ तथ ब्रह्मकगहरात कुरा ॥ होपा हातसे ॥ १०५ ॥ तव भीमसे
नु विसणे ला ॥ जैसा महाकाळु खवळला ॥ तेणे पौ उधास्फुरिला ॥ महाशंखु ॥ १०६ ॥ तो महाप्र
लयजबधर ॥ तैसा घडघडिला गहिर ॥ तव अनंत विजयो युधिष्ठिर ॥ धास्फुरितु असे ॥ १०७ ॥
॥ श्लोक ॥ अनंत विलयं राजा कुंतिपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ नकुळः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्य
कौ ॥ १०६ ॥ टिका ॥ नकुले सुघोषु ॥ सहदेवमणिपुष्यकु ॥ जेणे नाश अंत कु ॥ गजबजिता
यके ॥ १०५ ॥ श्लोक ॥ काश्यप परमेस्वासः सिखंडी च महारथः ॥ धृष्टद्युम्नो विराटश्च
सायनिश्चापराजितः ॥ १०७ ॥ द्रुपदो द्रौपदे याश्च सर्वशः पृथिवीपते ॥ सौभद्रश्च महा
बाहुः शखानुर्धुमः पृथक् पृथक् ॥ १०८ ॥ टिका ॥ तथ भूपति होत अनेक ॥ द्रुपद द्रौपदा
दिक ॥ हाका सीपती देख ॥ महाबाहु ॥ १०७ ॥ तथ अर्जुनाचा सुतु ॥ सायनी अपराजितु ॥ धृष्ट
द्युम्नरपनाथु ॥ सिखंडी हुन ॥ १०८ ॥ वैराटादि रुपवर ॥ जेसे न्यक सुख्य वीर ॥ ति हि नानाशंखनि

रतरा आसूरिले ॥ ५३ ॥ तणे महाघोषनिघीते ॥ शोषकूर्मी अवचिते ॥ गजबजोनिभूभारा
ते ॥ सांडूपाहाति ॥ ५४ ॥ तेथति किलोके उरुमळिता ॥ मरुमांदारआदोळता ॥ समुद्रजळउसळ
ता ॥ कैलासवेदि ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ सद्योवोधार्त्तराक्षणां हृदयानिव्यदारयत् ॥ नभस्वपृथि
वीचैवतुमुळोव्यनुनाश्यत् ॥ ५६ ॥ टिका ॥ पृथ्वीतळतुल्यथापाहत ॥ आकाशअसेआसू
त ॥ तेथसडाहोत ॥ नक्षत्राचा ॥ ५७ ॥ श्रुतिगेलिरेगेली ॥ देवामोळवादिजाती ॥ ऐसीये
कयळीपिटिली ॥ सप्तलोका ॥ ५८ ॥ दिहाचिदिनथाकळा ॥ जैसाप्रलयकाळमांडला ॥ तेथेहा
हाकारउटिला ॥ तिहिलोकि ॥ ५९ ॥ तवआदिपुरुषविस्मितु ॥ अणेशणेहोयअंतु ॥ मगलोपला
अडुतु ॥ संभ्रमुतो ॥ ६० ॥ अणोनिविश्वसंवरले ॥ येहवीयुगांतहोतेबोडवले ॥ जेमहाशंख
असूरिले ॥ हृष्टादिकी ॥ ६१ ॥ तोघोषतरिउपसंहरला ॥ परिपडिसादाहोताराहिला ॥ त
णेदुभारविध्वंसला ॥ कौरवाचा ॥ ६२ ॥ जैसागजघराआतु ॥ सिंहलिवाविदारिह ॥ तैसा

इदयाते भेदितु ॥ कौरवा चिया ॥ ६२ ॥ तो गाजतु ज वआयिकति ॥ तवउ भे चिहिय घालिति ॥
 येकमेकाते ह्यणति ॥ सावधरे सावध ॥ ६३ ॥ तेथे बके प्रोठि पुरते ॥ जेमहारथि वीर होता ॥ तिहिउ
 नरपिदकाते आवरिले ६४ ॥ **श्लोक ॥ अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कुविध्वजः ॥**
प्रवृत्ते राक्षसं पाते धनुस्स्यम्यपां उवः ॥ २० ॥ टिका ॥ मग सरसे पणे उदावले दुणवठे नि
 उचलेले ॥ तयां द्डीक्षो भले ॥ लोक नय ॥ ६५ ॥ तेथ वाणवरी धनुर्धर ॥ वर्षताति निरंतर ॥ जै से
 प्रकर्यां जिक धर ॥ अनिवारका ॥ ६६ ॥ तेदे खिलिया अर्जुने ॥ संतोषघे उनिमने ॥ मग संभ्रमे
 दितीसेने ॥ घालीतु असे ॥ ६७ ॥ तवसे गामी सिद्धु जाले ॥ सकळ कौरवदेखिले ॥ मग लिकाधनु
 स्य उचलिले ॥ पंडुकुमरे ॥ ६८ ॥ **श्लोक ॥ दृष्ट्वा कौरान् तदा वाक्यमिदं माह महीपते ॥ अर्जु**
न उवाच ॥ सेनयोर्भयोर्मध्ये रथं स्थापय मे च्युत ॥ २१ ॥ टिका ॥ तेके की ह्यणतसे देवा
 आता सउकरि रथपेलावा ॥ ने उनिमध्ये घालावा ॥ दोहीदुळा ॥ ६९ ॥ **श्लोक ॥ यावदतात्रिरी**
क्षहं योद्धुं कामानवस्थितान् ॥ कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्नणसमुद्यमे ॥ २२ ॥

त

९

दिका ॥ जव मो नावेक ॥ हे सकळ कीरसे नक निहाळीन अशेष लुंसते ज १७० ॥ श्लोक ॥
यास्य मानानवद्वेहं यदनेन समागताः ॥ धार्तराक्षस्य दुर्बुद्धेर्दुःप्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥
दिका ॥ येथ आले असति आघवे ॥ परिकवणे सिम्या जुंसावे ॥ हे रणी लोणे पाहावे ॥ प्रणो नि
या ॥ ७१ ॥ बहुत कसू निकोरवा हे अनुरदुःस्वभाव ॥ वाटिवे वीण हाव ॥ बांधती जुंसी ॥ ७२ ॥
जुंसाचि आवडि धरिती ॥ परिसंग्या मीधीर नकृति ॥ हे सांगो निराया प्रति ॥ काय संज
या लोणे ॥ ७३ ॥ श्लोक ॥ संजय उवाच ॥ एवमुक्त्वा हृषीकेशो गुडाकेशो नभारत ॥ से
नयो रभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमं ॥ २४ ॥ दिका ॥ आइके अर्जुन इतुके कोलिला ॥
तव केशे रथुपे लिला ॥ दो ही सैन्यामा जिक्केला ॥ उभातेणे ॥ ७४ ॥ श्लोक ॥ भीष्मद्रोणप्र
मुखतः सर्वेषां च महि क्षितां ॥ उवाच पार्थ पर्यैता न समवेता ॥ कुरुनिति ॥ २५ ॥
दिका ॥ जथ भीष्मद्रोणादिक ॥ जव किक्केचि स नुसव ॥ पृथीपती आणिक ॥ बहुत आहा
ति ७५

॥ श्लोक ॥ तत्रापस्य स्थिता न्यार्थः पितृ नय पितामहान् ॥ आचार्यान्मातुकाभ्या
 तृन्पुत्रान्मौत्रा सखीस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरा सुहृद श्वेवसेनयोस्तभयोरपि ॥ ता
 न्समीक्ष्य सकौंतयः सर्वांबंधू नवस्थितान् ॥ २७ ॥ टिका ॥ तेथ स्थिर करु निरथु
 अर्जुनअसेपाह तु ॥ तोदकभाससमस्तु संभ्रमेसी ॥ ७६ ॥ मग ह्यणे देवोदखदेख ॥ हे गोत्र
 गुरुआसेष ॥ तव ह्यह्मा मनि नावक ॥ विसोजाला ॥ ७७ ॥ तोआपणया आपण ह्यणे ॥
 येथ कायिकवणजाणे ॥ हेमनिधरितेयेणे ॥ परिका हि आश्वर्यअसे ॥ ७८ ॥ अंसिपु
 षितसेवेतु ॥ तोसहजेजाणे हृदयस्छु ॥ परिउगाअसे निवांतु ॥ तियेवेके ॥ ७९ ॥ तव
 तेथेपार्थसकळ ॥ पितृपितामहकेवळ ॥ गुरुबंधुमातुका ॥ देखताजाला ॥ ८० ॥ इह
 मित्रआपुळे ॥ कुमरजेनेदेखिते ॥ हेसकळअसतिआले ॥ तयामाजी ॥ ८१ ॥ सुहृद जन
 सासुरे ॥ आणीकहि सखेसोयरे ॥ कुमरपौत्रधनुर्धरे ॥ देखितेतेथे ॥ ८२ ॥ जयाउपका

२ होते कृते ॥ का आपदि जरा खिते ॥ हे असो वडिल धा कुले ॥ आदि कर्त्तुनि ॥ ६३ ॥ अैसे जे
त्रविदाहिदुखि ॥ उदीत जाले आसे कळि ॥ ते अर्जुने तिये वळि ॥ अवलो किते ॥ ६४ ॥ **श्रीका**
कृपया परया विद्या विधी दनि मन्त्र वीत ॥ अर्जुन उवाच ॥ दृष्टे मंस्वजनं कृष्णसुयुतं
ससुपस्थितं ॥ २६ ॥ दिका ॥ तथ मनी गज बज जालि ॥ आणि आपैसी कृपा आलि ॥ ते
णे अपमाने नि गालि ॥ वीर वृत्ती ॥ ६५ ॥ लिया उत मकुळि चिया होति ॥ आणि गुण लाव
ण्य आधी ॥ तिया आणि किते नसा हाति ॥ सते जपणे ॥ ६६ ॥ नविये आवडिचे निभेरा ॥ का मी
कुनि जवनि ता विसरे ॥ मग पाडे वीण अनुसरे ॥ भ्रम का जैसां ॥ ६७ ॥ का तपो बकेरि दी
पातले यां भ्रम बुद्धि ॥ मग विरक्ता सिद्धि ॥ आठवेना ॥ ६८ ॥ तैसे अर्जुना तथ जाले ॥ अस
ते पौरुषत्व गेले ॥ जे अंतःकरण ही धले ॥ कारण्यासि ॥ ६९ ॥ दस्वामंत्र सुवरण जाये ॥
तथ का जैसा संचार होये ॥ तैसा तो धनुर्धर महा मोहे ॥ आकळिता ॥ ७० ॥ **श्रीपौनि**

असता धीरुगेला ॥ हृदयाद्रावो आला ॥ जैसा चंद्रकिरणी सिंपिला ॥ सोमकांतु ॥ १७ ॥ तथापरि
 पार्थु ॥ अतिस्नेहे मोहितु ॥ मगसखेदुअसेबोलतु ॥ अकतेसि ॥ १८ ॥ तोश्रणेअवधारिदेवा ॥
 म्यापाहिलाहामेळावा ॥ तवगोत्रुवर्गुआववा ॥ देखिलायेथे ॥ १९ ॥ हसगामीअतिउद्धत ॥
 जाले असतीवीरसमस्त ॥ पणआपणपेयाउचित ॥ केविहोये ॥ २० ॥ **श्लोक ॥ सीदंतिमम**
गात्राणिमुखंचपरिसुष्यति ॥ वेपथुश्चशरीरमेरोमहर्षश्चजायते ॥ २१ ॥ रिका ॥
 येणेनावेचिनेणेकारि ॥ मजआपणपेसर्वथानाहि ॥ मनबुद्धियासी ॥ स्कीरनेके ॥ २२ ॥
 देखेदेहकांपत ॥ तोउअसेकोरेडेहोत ॥ विकळताउपजत ॥ गात्रासिपै ॥ २३ ॥ **श्लोक ॥**
गांडीवंस्त्रंसतेहस्तांतकैवपरिदूयते ॥ नचशक्रोम्यवस्थातुंभ्रमतीवचमेमन ॥ २४ ॥
श्लोक ॥ सर्वांगाकाराकाआला ॥ अतिसंतापुउपमला ॥ तिथेवेवंकहातुगेला ॥ गांडिवाचा ॥ २५ ॥
 तेनधरतचिनिश्ले ॥ परिनेणेचिहातौनिपडिले ॥ असेहृदयअसेव्यापिले ॥ मोहेयेणे ॥ २६ ॥
 जेवज्यापासौनिकेठिण ॥ दुर्धरअतिदारुण ॥ तथाहुनिअसाधारण ॥ हेक्षेहनवल ॥ २७ ॥

२१

२२

२१

लेणे से ग्या मी हसु जितिला ॥ निवांत क वंचा चा टोवो फे डिला ॥ तो अर्जुनु मो ह कु व तिला ॥ क्ष
णामाजी ॥ २ ॥ ॥ जैसे भ्रमर जे दीकोडे ॥ अलतै से काट करेडे ॥ परिक्रमिके माझि सापडे ॥ को
वळिये ॥ १ ॥ ते थु तीर्ण होयील प्राणे ॥ परिते कमळदळ विरनेणे ॥ तैसे कृतीणको वळपणे ॥
स्नेहेदुखार ॥ हे आदिपुरुषाचि माया ॥ अज्ञया ही नयेचि आया ॥ अणौ विभुल विला औके
राया ॥ संजयो अणुणे ॥ ३ ॥ अवधारि मगतो अर्जुनु ॥ देखो निसकळ स्वजन ॥ विसरळा अग्निमानु ॥
समामिचा ॥ ४ ॥ कैसीनेणे सदयता ॥ उपनतीते थुचिता ॥ मग अणुणे लहमा आता ॥ नसिजे ये
थे ॥ ५ ॥ मासे अतिशये मन व्याकुळ ॥ हातसे वाचावरळ ॥ जेवधावे हसकळ ॥ येणे नावे ॥ ६ ॥
॥ श्लोक ॥ निमित्तानिच पश्यामि विपरीता निकेशव ॥ नच श्रेयोनु पश्यामि दुखा स्वज
नमा हवे ॥ ३ ॥ ॥ टिका ॥ या कौरवाज रिवधावे ॥ तरियु धिहिरादीक कानवधावे ॥ हे येर
येर आघेवे ॥ गोत्रज आमचे ॥ ७ ॥ अणुणे निजको हजुंस ॥ प्रलयानये मज ॥ येणे कायकाज ॥ म
हपाप ॥ ८ ॥ देवा बहुति परि पाहाता ॥ यथवा खेठ होयील जुंसता ॥ वरकाहि चुकविता ॥ ९ ॥

१२

आधि ९ ॥ श्लोक ॥ न कांक्षे विजयं हृष्टं न च राज्यं सुखानि च ॥ किञ्चो राज्ये न गोविंद
 किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥ टिका ॥ तथा विजयं कृत्तिकादि ॥ मज सर्वथा काजनाहि ॥ येथे
 राज्यत ही काथि ॥ हे पाहू निया ॥ २९ ॥ या सकळो तेव धावे ॥ मगजे भोग भोगावे ॥ तेज बनु
 आघवे ॥ पार्थल्लणे ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ ये यामर्थं कांक्षितं चो राज्यं भोग सुखानि च ॥ त
 इमे व स्थिता युद्धे प्राणांस्तु का धनानि च ॥ ३३ ॥ टिका ॥ तेण सुखे वीण होयित ॥ तेभ
 लते ही साहि जैल ॥ वरि जिवित हीवे चि जैल ॥ या चित्तागी ॥ ३२ ॥ परियासि घातु कि जे ॥ मम
 आपण राज्य भोगी जे ॥ हे स्वप्ति ही मन मासे ॥ करून सवे ॥ ३३ ॥ तरि आह्मी काजनावे कुवणा
 लागी जियावे ॥ जेव दिता या चिंतावे ॥ विरुद्ध मने ॥ १४ ॥ पुत्राते इप्सी कुल ॥ तथाचे काइ हे
 चि फळ ॥ जि निर्दिनि जे केवळ ॥ गोत्र आपुले ॥ १५ ॥ हे मनीचि के विधरि जे ॥ आपण वज्राचे ॥
 या बो लिजे ॥ वरि घडे तरि कि जे ॥ भते यया ॥ १६ ॥ आह्मी जे जे जो डावे ॥ ते समस्तीये ही भो
 गावे ॥ हे जिवित ही उपकरावे ॥ काजी याचा ॥ १७ ॥ आह्मी दिगंतीचे भूपाळ ॥ विभाडू निस

१२

कक॥ मग से तो य विज कु॥ आपु ले जे ॥ १७ ॥ ते चि हे समस्त ॥ परिके से कर्म विपरिता ॥ जे
जाते असति उद्यत ॥ तुं शावया ॥ १८ ॥ अंतोरिया कुमरे सांडू निया भों डोर ॥ रास्त्रांगी जिहा
रे ॥ धारोपु नी ॥ २२ ॥ अिसिया ते कैसन मार ॥ कवणा वसी रास्त्र धर ॥ निज हृदया कर्ष घातु
के नी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ आचार्यः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ॥ मातुलाः शसुराः
पौत्राः शालाः संबन्धिनस्तथा ॥ २३ ॥ टिका ॥ हेनेण सीतू कवण ॥ तरि पैल भी अद्रोण
जयाचे उपकार असा धारण ॥ आहा बहुत ॥ २२ ॥ यथ शाल क सासुरे मातु अ ॥ आणिवंधू
की हे सकक ॥ पुत्र नातू कवळ ॥ इष्ट ही असती ॥ २३ ॥ अवधारी अतिज वलिकेचे ॥ हे सकक ही
सायिरे आमचे ॥ ऋणानि दोषु आधी वाचे ॥ बोलताचि ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ एतान्न हंतुमि
द्यामि ॥ अथ तो विमधु सूदन ॥ अपित्रै लोकवराज्यस्य हेतोः किन्तु मही कते ॥ २५ ॥
हे वरि भल ते करितु ॥ आताचि येथे मारितु ॥ पण आपण मने घातु ॥ नचि तावा ॥ २५ ॥

त्रैलोक्ये च अनकलित ॥ जहिराज्य होयी लयेथे ॥ त ही हे धनुचित ॥ नाचरे मी ॥ २६ ॥
 जरि आजिये ये ऐसे विजे ॥ तरि कवणाचा मनी उरिजे ॥ सांगे मुख के विपाहिजे ॥ तु से कृष्ण
 २७ ॥ श्लोक ॥ निहल्य धार्तराष्ट्रान्नः काप्री तिस्य जनादिन ॥ पापमेवाश्रयेदस्मान्
 हतेतानाततायिनः ॥ २६ ॥ टिका ॥ जरि बहु करी न गोत्राचा ॥ तरि न सोरा हा उनि दोषाचा
 मज जो उलासितू हातिचा ॥ दूरि होसी ॥ २७ ॥ कुळ हरणी पातके ॥ तिये आंगी ज उति धरोषे
 ते केळि तु कवणे के ॥ दुखा वासि ॥ २८ ॥ जै सा उघाना मा जि धन बु ॥ संचर लोदखोनि प्रबु
 मगक्षण भरी का किकु ॥ स्थीर न के ॥ २३ ॥ सकदे मुसरो वर ॥ अवलो वू निचकोर ॥ नस वि
 त धकेर ॥ करु निनिघे ॥ ३१ ॥ तया परितु देवा ॥ मज सको नै ये सिमावा ॥ जरि पुण्या चाको
 लावा ॥ नासि जै ल ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ तस्मान्ना ही वयं हंतुं धार्तराष्ट्रान् स्वबंधवान् ॥
 स्वजनं हि कथं हता सुखिनः स्याममाधव ॥ ३७ ॥ टिका ॥ हजौ निमीहे न करि ॥ इये

संया मीशस्त्रनधरी ॥ हे विडाल बहु तीपरी ॥ दिसतेस ॥ ३३ ॥ तु जसि अंतरा वो होयीत ॥ मग
सांगे काय आमचे उरेंत ॥ तणे दुःखे हिये फुटेत ॥ तुज वीण कृष्णा ॥ ३४ ॥ म्हणो नि कोरवें हवें धि
जति ॥ मग आ ही भाग भोगी जति ॥ हे असो मातु अघड ती ॥ अर्जुन हणे ॥ ३५ ॥ **श्लोक ॥ य**
द्यप्येते न पर्यति को भोपहतचेतसः ॥ कुलक्षयकृतं दायं मित्रद्रोहचपातकं ॥ ३६ ॥
टिका ॥ हे अभिमान मदे भुलले ॥ जे हो पासाया मा आले ॥ ते ही आ ही हीत आपुले ॥ जाणावे
लागे ॥ ३६ ॥ हे तसे कैसे करावे ॥ जे आपुले आपण मरावे ॥ जाणत जाणता सेवावे ॥ कारु कु
र ॥ ३७ ॥ हाजी मार्ग चालता ॥ पुढा सिंहु जाला अवचिता ॥ तो तव चुकविता ॥ **श्लोक ॥**
असता प्रकारा सांडावा ॥ मग अंध कुप आग्रावा ॥ तरि तेथ कुवणु देवा ॥ **श्लोक ॥**
कासो मार आगि देखोनि ॥ तरि नव चिजे वो सडोनि ॥ तरि क्षणायें का कुवणुनि ॥ **श्लोक ॥**
॥ श्लोक ॥ कथं न जय मस्माभिः पापदस्मान्निवर्तितं ॥ कुलक्षयकृतं दायं प्रपर्याद्भिर्ज

नाईन ॥ ३५ ॥ **रिका** ॥ तैसे दो वहे मूर्ती ॥ आंगी वा जो असति पाहता ॥ हे जाणता हिके वि
 येथ ॥ प्रवर्त्तीवे ॥ ३६ ॥ ऐसे पार्थु तिये अवसरि ॥ सुणे देवा अवधारी ॥ या कल्प्याची थो
 रि ॥ सांगे न तुज ॥ ३७ ॥ **श्लोक** ॥ कुल क्षये प्रणश्यंति कुलधर्माः सनातनाः ॥ धर्मेन
 देकुलं कृत्स्न मधर्माभिभवत्त ॥ ३८ ॥ **रिका** ॥ जैसे काटे काट मयि जे ॥ तेथ वंजिये
 कउपजे ॥ तेणे काट जात जा बिजे ॥ प्रज्वळते नी ॥ ३९ ॥ तैसे सा गोत्रि चि परस्परे ॥ जरि वधु घ
 डे मछरे ॥ तरि तेणे महा दोष घोर ॥ कुळ चि नासे ॥ ४० ॥ सुणे नियेण पापे ॥ वंशानु धर्म लोपे
 मग अधर्मुचि आरोपे ॥ कुळ माली ॥ ४१ ॥ **श्लोक** ॥ अधर्माभिभवात् कुलं संप्रदुष्यति
 कुलस्त्रियः ॥ स्त्रीषु दुष्टा सुवाक्यं यत्नायते वणी संकरः ॥ ४२ ॥ **रिका** ॥ तेथे सारा सार
 विचारावे ॥ कवणे काय आचरावे ॥ व्याणि विधी निषध आघवे ॥ पारुषती ॥ ४३ ॥ असता ही
 पुद्वडिजे ॥ मग अंधः कारी राहा दिजे ॥ तरि उजूचि आड बिजे ॥ जया परि ॥ ४४ ॥ तैसे सा कु

विदुःक्षयो होये ॥ तेकेवितो आद्यधर्मजाये ॥ मग आनका ही आहे ॥ पापावाचुनि ॥ ४८ ॥
जैयमनियमराकति ॥ तथरेद्रियेसैराविचरती ॥ ह्युणानि व्यभिचारघउती ॥ कुळस्त्रिया ॥ ४९ ॥
उत्तमअधमीसंचरती ॥ हेसेवर्णावर्णमिलळति ॥ तथसमुळउपउति ॥ ज्ञातिधर्म ॥ ५० ॥
जैसिचौहटाचियेवळि ॥ पावतीसैराकाउळि ॥ तैसीमहापापेकुळि ॥ प्रवेशती ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥
संक्रो नरकायेवकुळघानांकुळस्यच ॥ पतंतिपितरोह्यवांलुसपिंडोदकत्रियाः ॥ ४२ ॥
दिका ॥ मगकुळातयाअशेषा ॥ आणिकुळघातका ॥ येरयेरानरका ॥ जाणेअर्थी ॥ ५२ ॥ हेसेवंश
दृष्टिसमस्त ॥ यापरिहोयपतित ॥ मगवोवांउतीस्वर्गस्थ ॥ पूर्वपुरुष ॥ ५३ ॥ जेथनि त्यादित्रिया
राके ॥ आणिनैमित्युक्मपास्त्रे ॥ तिथेकवणातिकोदके ॥ कवणअपि ॥ ५४ ॥ तरिपितरकायिकरि
ति ॥ तैसेनिस्वर्गवसती ॥ ह्युणानितेहियेती ॥ कुळापासी ॥ ५५ ॥ जैसानखाग्रीव्याकुळागे ॥
ताशिखांतव्यापीवेगे ॥ तेविआब्रह्मकुळआवघे ॥ आप्तविजे ॥ ५६ ॥ **श्लोक ॥ दोवैरतैः**

१५

कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ॥ ७३ ॥ उत्साद्यते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ७३ ॥

उत्सन्नकुलधर्माणं मनुष्याणां जनार्दन ॥ नरके नियतं वासो भवतीत्यनुश्रुम ॥ ७४ ॥

रिका ॥ देवा अवधारी आणी कयेक ॥ येथ घेडम हा पातक ॥ जे संग दोषे हे लोकिक ॥ अं रा पावे ॥ ५७ ॥

जे साघरि आपुता ॥ वा निवसे वहि त्तागता ॥ तो आणिका हि प्रज्वळता ॥ जातु नि घाति ॥ ५८ ॥

तैसिया तया कुलसंगति ॥ जे जे लोक वर्तती ॥ तिहि बाधु पावति ॥ निमित्तयेणे ॥ ५९ ॥ तैसे नाना

दोषसकळ ॥ अर्जुन ह्मणे ते कुळ ॥ मग महाघोर केवळ ॥ निरय भोगी ॥ ६० ॥ पडितिया तिये रा

यि ॥ मग कत्मां तिहि उगडुना हि ॥ यसेणे पतन कुळ क्षई ॥ अर्जुन ह्मणे ॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ अहो व

तमहसापंकुतं व्यवसिता वयं ॥ यद्वा ज्यसुखलोभेन हंतुं स्वजनमुद्यताः ॥ ७५ ॥ रिका ॥

देवा हे विविधकानी आयिकि जे ॥ परि असुणवरी भासुतुपजे ॥ हृदयवल्याचे हे कार्याकी जे ॥ अव

धारिणा ॥ ६२ ॥ अपेक्षेजे राय सुख ॥ ज्याला गिते तव क्षणिक ॥ हे से जाणता हि दोष ॥ अकेरता ॥ ६३ ॥

१५

जेहेव डिल स कळ हि आपुले ॥ वधाया दिरी सूदले ॥ सोगपा कायिथे कुले ॥ घउले आ म्हा ॥ ६४ ॥
॥ श्लोक ॥ यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ॥ धार्तराष्ट्राणे ह्युत्तमे क्षेम
तरं भवेत् ॥ ६५ ॥ ॥ रिक्ता ॥ आलायावरिजे ज्या वे ॥ तया पासु नीह वरे ॥ जे शस्त्रे सांडो निसा हावे ॥
वाणयाचे ॥ ६५ ॥ तयावरि होय जी तुके ॥ ते मरण हि वरि नीके ॥ परियेणे के ल्म वे ॥ चाउना हि ॥ ६६ ॥
हे से देखोनि सकळ ॥ अर्जुने आपुले कुळ ॥ मग ह्मणे राज्ये ते के वळ ॥ निरय भोगु ॥ ६७ ॥
हे से तया अवसरी ॥ अर्जुन बोळिला समरी ॥ संजयो ह्मणे उवधारी ॥ धृतराष्ट्राते ॥ ६८ ॥
॥ श्लोक ॥ संजय उवाच ॥ द्रुपदु ह्यर्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ॥ विसृज्य
सशरं चापं शोकं संविग्नमानसः ॥ ६९ ॥ ॥ रिक्ता ॥ मग असंत उद्ये गला न धरतु गहि वर
आला ॥ तेथे तु डीघातली खात्मा ॥ रथो निया ॥ ६९ ॥ जै साराज कुमर पदें ॥ तु ॥ सर्वथा होय उ च्य
पह तु ॥ कार विराहु गस्तु ॥ प्रभाहीनु ॥ २७ ॥ ॥ ना तरि महासिद्धि स भ्रमे ॥ जिति लाता पसु भ्रमे

जेहेव डिल सकळ हि आपुले ॥ वधाया दिशी सूदले ॥ सोगपा कायिथे कुले ॥ घउले आम्हा ॥ ६४ ॥
॥ श्लोक ॥ यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ॥ धार्तराक्ष्णो ह्यनुत्तमो क्षेम
तरं भवेत् ॥ ६५ ॥ टिका ॥ आतायावरिजे ज्यावे ॥ तया पासुनी हबरे ॥ जेशस्त्रे सांडो निसा हावे ॥
वाणयाचे ॥ ६५ ॥ तयावरि होय जी तुके ॥ ते मरण हि वरि नीके ॥ परियेणे के लक्षणे ॥ चाडना हि ॥ ६६ ॥
हसे देखोनि सकळ ॥ अर्जुने आपुले कुळ ॥ मग ह्मणे राज्ये ते के वळ ॥ निरय भोगु ॥ ६७ ॥
हसे तया अवसरी ॥ अर्जुन बोळित्ता समरी ॥ संजयो ह्मणे अवधारी ॥ धृतराक्ष्ण ॥ ६८ ॥
॥ श्लोक ॥ संजय उवाच ॥ एवमुक्त्वा अर्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपविशत् ॥ विसृज्य
सशरं चापं शोकं संविग्नमानसः ॥ ६९ ॥ टिका ॥ मग अहंत उद्देगला न धरतु गहि वर
आत्मा ॥ तेथे उडी घातली स्वात्मा ॥ रथो निया ॥ ६९ ॥ जै साराज कुमर पदे ॥ सर्वथा होय उ
पह तु ॥ कार विराहु गस्तु ॥ प्रभाहीनु ॥ २७ ॥ नातरि महासिद्धि स भ्रमे ॥ जित्ति ताता पासु भ्रमे

